औषधी सूची

१. रसायन कल्प

१) आरोग्यवर्धिनी रस
२) चंद्रकला रस
३) एकांगवीर रस
४) गंधक रसायन
५) कृमिकुठार रस
६) लघुमालिनी वसंत
७) लक्ष्मीविलास रस
८) महावातविध्वंस रस
९) साधासूतशेखर
१०) शंखवटी
११) श्वासकुठार रस
१२) त्रिभुवनकिर्ती रस

2. गुग्गुल कल्प

१) गोक्षुरादि गुग्गुल
२) कैशोर गुग्गुल
३) कांचनार गुग्गुल
४) लाक्षादि गुग्गुल
५) पुनर्नवादि गुग्गुल
६) सिंहनाद गुग्गुल
७) त्रिफला गुग्गुल
८) योगराज गुग्गुल

3. गुटी तथा वटी

१) चंद्रप्रभा वटी
२) संजीवनी वटी
३) रजप्रवर्तिनी वटी

४. अन्य दवाईयाँ

१) कामदुधा (मौक्तिक विरहित)
२) प्रवाळ पंचामृत (साधा)
३) प्रवाळ पिष्टी
४) शुद्ध शिलजित (पावडर)
५) शुद्ध शिलजित वटी

रसायन कल्प

१) आरोग्यवर्धिनी रस

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग १ ला, श्लोक ४४८ ।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, शुद्ध शिलजित, कुटकी, शुद्ध गुग्गुल, इ. ।
गुणधर्म	:	त्रिदोषहर, अग्निदीपक, पाचक, हृद्य, मेदनाशक तथा सर्वरोगनाशक ।
उपयोग	:	अग्निमांद्य, यकृतविकार, मलबद्धता, स्थौल्य, त्वचाविकार, इ. ।
मात्रा	:	२/२ गोलियाँ दिन में ३ बारे गरम पानी के साथ ।

२) चंद्रकला रस

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग २ रा, श्लोक १८८५ ।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, ताम्र भस्म, कुटकी, गिलोयसत्व, पित्तपापडा, खस, श्वेतसारिवा इ. ।
गुणधर्म	:	शीतल, पित्तज / वातपित्तजविकार नाशक, दाहशामक, रक्तपित्तनाशक ।
उपयोग	:	ज्वर, शरीर का अंतर्दाह तथा बाह्यदाह, रक्तपित्त, रक्तवमन, मूत्रदाह, गरमीके वजह से मूर्च्छा आदि में उपयुक्त ।
मात्रा	:	२/२ गोलियाँ दिनमें २-३ बार ठंडे पानी के साथ ।

३) एकांगवीर रस

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग १ ला, श्लोक ५८५ ।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	रससिंदूर, शुद्ध गंधक, कांतलोहभस्म, तीक्ष्णलोहभस्म, वंगभस्म, नागभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, तथा त्रिकटु ।
गुणधर्म	:	वातनाशक ।
उपयोग	:	पक्षाघात, अर्धांगवात, अर्दित, गृध्रसी (सायटिका), इ. तथा वातविकारो में उपयुक्त ।
मात्रा	:	१ से २ गोलियाँ दिनमें ३ बार घी के साथ ।

४) गंधक रसायन

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग २ रा, श्लोक १५३३ (२)।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध गंधक ।
गुणधर्म	:	सप्तधातुवर्धक, अग्निवर्धक, प्रमेहनाशक तथा कुष्ठनाशक ।
उपयोग	:	त्वचाविकार, धातुक्षय, अग्निमांद्य, प्रमेह इ. में उपयुक्त ।
मात्रा	:	१ गोली दिन में २-३ बार दूध के साथ ।

५) कृमिकुठाररस

संदर्भ : रसचंडांश श्लोक ६१४।

प्रमुख घटक द्रव्य : पालाशबीज चूर्ण, कर्पूर, इंद्रयव, त्रायमाण, अजमादि, वायविडंग, बचनाग, हिंगुळ तथा नागकेशर।

गुणधर्म : कृमिनाशक।

उपयोग : सभी प्रकारके कृमि, कृमिजनित अतिसार, पांडु, त्वचाविकार तथा अन्य व्याधियों में उपयुक्त।

मात्रा : १/१ गेली दिन में २ बार।

६) लघुमालिनी वसंत

संदर्भ : भा. भै. र., भाग ४ था, श्लोक ६९७२।

प्रमुख घटक द्रव्य : खपरियाँ तथा काली मिर्च।

गुणधर्म : पित्तजशूलनाशक, ज्वरहर, अतिसारहर, तथा रक्तविकारनाशक है।

उपयोग : जीर्णज्वर, रक्तातिसार, रक्तप्रदर, रक्ततार्श इ. में उपयुक्त।

मात्रा : १/१ गोली दिनमें ३ बार पिपल के चूर्ण और शहदके साथ।

७) लक्ष्मीविलास रस

संदर्भ : रसतरंगिणी, चतुर्विंशस्तरंग श्लोक २१६ से २२१।

प्रमुख घटक द्रव्य : शुद्ध सुहागा, शुद्ध कुचला, लोहभस्म, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, तथा काली मिर्च इ.।

गुणधर्म : पौष्टिक, बलवर्धक, वीर्यवर्धक, वर्ण्य, शरीरक्षयनाशक, अग्निवर्धक, तथा रक्तवर्धक।

उपयोग : ओजक्षय, दुर्बलता, अग्निमांद्य इ. में उपयुक्त।

मात्रा : १/१ गोली दिनमें दूध तथा घी के साथ।

८) महावातविध्वंस रस

संदर्भ : भा. भै. र., भाग ४ था, श्लोक ६९९७।

प्रमुख घटक द्रव्य : शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, नाग भस्म, वंग भस्म, शुद्ध बचनाग, टंकण तथा त्रिकटु इ.।

गुणधर्म : वात तथा कफ दोष नाशक, अग्निवर्धक, आम्लपाचक इ.

उपयोग : वातज शूल, वातकफजशूल, वातव्याधि इ. में उपयुक्त।

मात्रा : १ गोली दिनमें ३ बार गरम पानी के साथ।

९) साधासूतशेखर

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग ५ वाँ, श्लोक ८२६१।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध धत्तुराबीज, सुवर्णमाक्षिक भस्म, ताम्रभस्म, शंखभस्म, सुहागा, त्रिकटु, चातुर्जात इ.।
गुणधर्म	:	कफपित्तदोषनाशक, विषघ्न।
उपयोग	:	आम्लपित्त, वमन, शूल, खाँसी, अग्निमांद्य, हिचकी, आदि में उपयुक्त।
मात्रा	:	१ गोली शहद और घी के साथ दिन में २ से ३ बार

१०) शंखवटी

संदर्भ	:	भा. भै. र, भाग ५ वाँ, श्लोक ७५५४।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध वत्सनाभ, शंखभस्म, इमलीका क्षार, पंचलवण, हिंग व त्रिकटु।
गुणधर्म	:	अग्निदीपक, पाचक, अर्शनाशक, शूलघ्न इ.।
उपयोग	:	अग्निमांद्य, अजीर्ण, पांडु, अर्श, उदरशूल, प्रमेह, वातारक्त, इ.।
मात्रा	:	२/२ गोलियाँ आवश्यकतानुसार मन्दोष्ण जल के साथ।

११) श्वासकुठार रस

संदर्भ	:	भा. भै. र, भाग ५ वाँ, श्लोक ७६९५ (२)।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध टंकण, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध मनसिल, तथा त्रिकटु, इ.।
गुणधर्म	:	कफनाशक, श्वासनाशक।
उपयोग	:	खाँसी, अस्थमा तथा शिरोरोग आदि में उपयुक्त।
मात्रा	:	१/१ गोली दिन में २ बार उष्ण जल या कंटकारी क्वाथ के साथ।

१२) त्रिभुवनकिर्ती रस

संदर्भ	:	भा. भै. र, भाग २ रा, (ज्वराधिकार) श्लोक २७५५।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध टंकण त्रिकटु इ.।
गुणधर्म	:	ज्वरनाशक।
उपयोग	:	सभी प्रकार के ज्वर।
मात्रा	:	१ गोली दिन में २ से ३ बार गरम पानी के साथ।

गुग्गुल कल्प

१) गोक्षुरादि गुग्गुल

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग २ रा, श्लोक १३३७।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	गोखरु, गुग्गल, त्रिकटु, त्रिफला, मुस्ता इ.।
गुणधर्म	:	मूत्रल, मूत्रदोषहर, कफपित्तदोषहर।
उपयोग	:	प्रमेह, वातरक्त, वातव्याधि, मूत्राघात, पथरी, (अश्मरी) तथा मूत्रविकार।
मात्रा	:	२/२ गोलयाँ दिन में ३ बार पानी के साथ।

२) कैशोर गुग्गुल

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग १ ला, पान ७७३।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	गिलोय, गुग्गुल, त्रिकटु, त्रिफला, विडंग, त्रिवृत, दंती इ.।
गुणधर्म	:	मेदोहर, कफवातदोषहर, रक्तदोषहर, अग्निवर्धक इ.।
उपयोग	:	अग्निमांद्य, प्रमेह, रक्तक्षीणता, शोथ, त्वचाविकार, वातरक्त, मेद तथा व्रण।
मात्रा	:	२/२ गोलियाँ दिन में ३ बार दूध, घी, सुगंधित जल या गरम पानी के साथ।

३) कांचनार गुग्गुल

संदर्भ	:	भा. भै. र, भाग १ ला, श्लोक ७७२।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	कांचनार छाल, गुग्गुल, त्रिकटु, त्रिफला, वरुण, त्रिजात, इ.।
गुणधर्म	:	आमदोषहर, कफदोषहर, गुल्मनाशक इ.।
उपयोग	:	गंडमाला, अर्बुद, भगंदर आदि विकारो मे उपयुक्त।
मात्रा	:	२/२ गोलियाँ दिन में ३ बार गरम पानी के साथ।

४) लाक्षादि गुग्गुल

संदर्भ	:	भा. भै. र, भाग ४ था, श्लोक ६२५५।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	लाक्षा, अस्थिसंहारी, अर्जुनछाल, अश्वगंधा, नागबला तथा शुद्ध गुग्गुल।
गुणधर्म	:	अस्थिसंधानकर
उपयोग	:	अस्थिभंग, अस्थिमार्दव, अस्थिसौषिर्य, (Osteoporosis) कमरदर्द इ. मे उपयुक्त।
मात्रा	:	१/१ गोली दिन में २ से ३ बार शहद के साथ।

५) पुनर्नवादि गुग्गुल

संदर्भ	:	भा. भै. र, भाग ३ रा, श्लोक ४०१३ ।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	रक्तपुनर्नवा, देवदार, हरितकी, गुडुची, शुद्ध गुग्गुल इ. ।
गुणधर्म	:	शोथहर, मूत्रविरेचक तथा कफघ्न ।
उपयोग	:	शोथ, सर्वांगशोथ, मूत्राल्पता, हृदयरोग, संधिवात, यकृत तथा प्लीहावृध्दी, उदररोग इ. ।
मात्रा	:	१/१ गोली दिन में २ से ३ बार गरम पानी के साथ ।

६) सिंहनाद गुग्गुल

संदर्भ	:	भावप्रकाश, मध्यमखंड, श्लोक २२२ ते २२६
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध गुग्गुल, त्रिफला, शुद्ध गंधक, त्रिकटु, शुद्ध पारद, बायबिडंग, गिलोय, एरंडी का तेल इ. ।
गुणधर्म	:	कफदोषहर, आमदोषहर इ. ।
उपयोग	:	आमवात, पांडु कुष्ठ, श्वास ।
मात्रा	:	२/२ गोलीयाँ दिन में ३ बार गरम पानी के साथ ।

७) त्रिफला गुग्गुल

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग २ रा, क्र. २४२३ ।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	त्रिफला, शुद्ध गुग्गुल तथा पिपल ।
गुणधर्म	:	कफदोषहर, आमदोषहर शोथहर तथा अर्शनाशक इ. ।
उपयोग	:	अंतर्विद्रधि, अर्श, भगंदर, नाडीव्रण तथा शोथ ।
मात्रा	:	२/२ गोलीयाँ दिन में ३ बार गोमूत्र या त्रिफला क्वाथ के साथ ।

८) योगराज गुग्गुल

संदर्भ	:	भा. भै. र. भाग ४ था, श्लोक ५७७७ ।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	गुग्गुल, चित्रक, चवक, त्रिकटु, त्रिफळा, विडंग, अतिविष, वचा, मूर्वा इ. ।
गुणधर्म	:	अग्निवर्धक, रसायन, कुष्ठनाशक, शुक्र तथा योनिदोषहर तथा त्रिदोषघ्न ।
उपयोग	:	अग्निमांद्य, संग्रहणी, अर्श, प्रमेह, वातरक्त श्वास, संधिशुल, शुक्र तथा योनीदोष, त्वचाविकार तथा संधिशुल में उपयुक्त ।
मात्रा	:	२/४ गोलीयाँ प्रात:कालमें शहद या घी के साथ ।

गुटी तथा पटी

१) चंद्रप्रभावटी

संदर्भ : भा. भै. र., भाग २ रा, श्लोक १७३९ (१)।

प्रमुख घटक द्रव्य : कचोरा, बच, मुस्ता, गुडुची, हलदी, दारूहल्दी, त्रिफला, त्रिकटु, लोह भस्म, सुवर्णमाक्षिक भस्म, देवदार, शुद्ध शिलाजित, शुद्ध गुग्गुल इ.।

गुणधर्म : प्रमेहनाशक, अग्निवर्धक, त्रिदोषनाशक, बल्य, वृष्य रसायन, तथा मूत्रल है।

उपयोग : प्रमेह, मलावरोध, अग्निमांद्य, अर्श, त्वचारोग, शुक्ररोग, मूत्राघात, पथरी, मूत्रग्रंथिविकार, आर्तवविकार, पांडु, तथा कामला आदि में उपयुक्त।

मात्रा : २/२ गोलियाँ दिन में ३/४ बार दूध के साथ।

२) संजीवनी वटी

संदर्भ : भा. भै. र., भाग ५ वाँ, श्लोक ८१२५।

प्रमुख घटक द्रव्य : बायबिडंग, मुस्ता, त्रिकटु, बच, भल्लातक तथा गुडुची।

गुणधर्म : अग्निवर्धक, अतिसारहर, पाचक इ.।

उपयोग : अग्निमांद्य, अपचन, गुल्म, विसुचिका, (उलटी तथा दस्त) आदि में उपयुक्त।

मात्रा : १/१ गोली दिन में २ से ३ बार अद्रक के रसके साथ।

३) रजप्रवर्तिनी वटी

संदर्भ : भै. र. पृष्ठ क्र. ७२६, श्लोक ५८-६०

प्रमुख घटक द्रव्य : कालाबोल (एलवा), शु. सुहागा, कसिस, शु. हिंग

गुणधर्म : रजप्रवर्तक, कफवातशामक, गर्भाशय शुद्धीकर, अनुलोमक, शुलहर, रक्तवर्धक

उपयोग : रजोनिरोध (नष्टार्तव), कष्टार्तव, पीडीतार्तव

मात्रा : १-२ वटी, गुनगुने पानी के साथ

अन्य दवाईयाँ

१) कामदुधा (मौक्तिक विरहित)

संदर्भ : भा. भै. र., भाग १ ला, श्लोक ९४८७।

प्रमुख घटक द्रव्य : प्रवाळ भस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, कपर्दिक भस्म, शंख भस्म, शुद्ध सुवर्ण गैरिक तथा गिलोय सत्व।

गुणधर्म	:	जीर्णज्वरनाशक, पित्तनाशक।
उपयोग	:	जीर्णज्वर, आम्लपित्त, भ्रम, उन्माद तथा सोमरोग।
मात्रा	:	१/१ गोली दिन में २ से ३ बार शक्कर, तथा जीरा चूर्ण के साथ।

२) प्रवाळ पंचामृत (साधा)

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग ३ रा, श्लोक ४४६८।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	प्रवाळ भस्म, शंख भस्म, शौक्तिक भस्म, तथा कपर्दिक भस्म।
गुणधर्म	:	अग्निवर्धक, उदररोग, कफविकारनाशक।
उपयोग	:	अग्निमांद्य, उदररोग, प्लिहाविकार, गुल्म, खाँसी, तथा श्वासविकार।
मात्रा	:	१/१ गोली दिन में २ से ३ बार।

३) प्रवाळ पिष्टी

संदर्भ	:	सिद्धयोग संग्रह।
गुणधर्म	:	मधुर, पित्तविकारनाशक, शुक्रवर्धक, कांतिवर्धक, शीतवीर्य।
उपयोग	:	आम्लपित्त, नेत्रदाह, शुष्कखाँसी, रक्तपित्त, वमन, मूत्रदाह आदि में उपयुक्त।
मात्रा	:	१०० से २०० मि. ग्रॅ. दिन में २ या ३ बार।
अनुपान	:	घी, मख्खन, दूध।

४) शुद्ध शिलजित (पावडर)

संदर्भ	:	भा. भै. र., भाग ५ वाँ, श्लोक ७६०९।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध शिलजित।
गुणधर्म	:	प्रमेहघ्न, योगवाही, मूत्रल, बल्य।
उपयोग	:	प्रमेह, पथरी, अशक्तता, मूत्राल्पता इ.।
मात्रा	:	२०० मि. ग्रॅ. दिन में २ से ३ बार।

५) शुद्ध शिलजित वटी

संदर्भ	:	भावप्रकाश, पूर्वखंड पान ६५२।
प्रमुख घटक द्रव्य	:	शुद्ध शिलजित।
गुणधर्म	:	प्रमेहघ्न, योगवाही, मूत्रल, बल्य।
उपयोग	:	प्रमेह, पथरी, अशक्तता, मूत्राल्पता इ.।
मात्रा	:	१/१ गोली दिन में २ से ३ बार।